बहुरूपिया

[घण्टी बजती है। नवाब साहब नौकर से कहते है।]

नवाब—देखो बाहर कोन है ?

[दरवाजा खुलने की आवाज, नोकर जाता है।]

आगन्तुक—क्यो भई, नवाब साहब बहादुर तशरीफ रखते है ?

नौकर—तो क्या हुजूर ताँगे पर आ गये ? नवाब साहब ने तो मोटर भेजा था। वह आप ही का इन्तेजार कर रहे थे······।

आगन्तुक—[आश्चर्य से] मोटर भेजा था ? मेरा इन्तेजार कर रहे थे ?

नौकर—जी हा। अभी तो गया है मोटर। मै सरकार को इत्तला तो कर दूँ कि हुजूर आ गये। [दौडता हुआ दरवाजा खोलकर जाता है और आगन्तुक कुछ शाति के बाद अपने आप से कहता है।]

आगन्तुक—मोटर ? इन्तजार ? नोकरी के उम्मीदवारों के लिए मोटर ?

[नवाब साहब आते है।]

नवाब साहब—जीते रहो, जीते रहो। हाथ क्या मिला रहे हो, इधर आओ। तुमको गले से तो लगाऊं। [गले लगाकर पीठ पर थपकियाँ देते है।] भई, क्या गधा है यह ड्रायवर भी। यानी तुमको ताँगे पर आना पड़ा। खैर, खैर तो आओ।

आगन्तुक—तो हुजूर को मेरा तार वक्त पर मिल गया था ?

नवाब साहब—हा भई, तार मिल गया था, मगर मुझे जरा नजले की शिकायत थी। खैर, खैर तो मतलब यह है कि खैरियत तो है ? भई, बहुत तबियत खुश हुई तुमको देखकर। [आवाज देकर] अरे कोई है ?

नौकर—सरकार !

नवाब साहब—भई, इनका सामान मेरे कमरे में रखवाओ। जिस

तरह से ये कहें सामान दुरुस्त कर दो। [आगन्तुक से] मियाँ यह तुम्हारा ही घर···यानी···यानी ख़ाना-ए-बेतकल्लुफ़ है। तो मेरा मतलब यह कि तुम सामान रखवा दो अपनी निगरानी में। जब तक मैं घर में तो इत्तला कर दूँ तुम्हारे आने की।

आगन्तुक—जो राय हो हुज़ूर की।

नवाब साहब—मियाँ, यह हुज़ूर-वुज़ूर का तकल्लुफ़ भी छोड़ो। तुम मेरे बच्चे हो। बड़ी ख़ुशी हुई तुमको देखकर। तो मतलब यह कि अब जाकर पहले अपना सामान दुरुस्त करा दो। [नवाब साहब उधर और यह इधर जाते हैं।]

आगन्तुक—भई जमादार साहब, तुम्हारा नाम क्या है?

नौकर—अल्लाह सलामत रखे इस ग़ुलाम को, जुम्मन ख़ाँ कहते हैं। तो सरकार मैंने यह रख दिया है सब सामान। बिस्तर नहीं खोला है, नवाब साहब की मसहरी तो मौजूद है ही।

आगन्तुक—भई, नवाब साहब की मसहरी पर तो······।

नौकर—जी हाँ, नवाब साहब की मसहरी पर सब चीज़ें हैं। और हुज़ूर लोटा ग़ुसलख़ाने में रख दिया है। बक्स यह रहा और सरकार यह झाबा कहिए तो कहीं बाहर रखवा दूँ?

आगन्तुक—हाँ, हाँ···इसे बाहर···मैं ख़ुद रखे देता हूँ।

नौकर—नहीं, नहीं, हुज़ूर भला कोई बात भी हो। यह ग़ुलाम आख़िर काहे के लिए है?

आगन्तुक—भई, सख़्त तकलीफ़ हुई तुमको मेरे आने की वजह से। और भई नवाब साहब······।

[नवाब साहब आवाज़ देते हैं।]

नवाब साहब—अरे कोई है?

नौकर—सरकार···। [दौड़ता है।]

नवाब साहब—सब सामान रखवा दिया? इन्तज़ाम ठीक है ना?

देखो किसी बात की तकलीफ़ न हो। [आवाज़ देकर] भई, चाय तैयार है, अब नाश्ता करके इत्मेनान से आराम करना।

आगन्तुक—[कमरे से बाहर आकर] जी हाँ, मैं तैयार हूँ।

नवाब साहब—भई, वह हुआ यह कि मैंने जो तुम्हारी इत्तला की तो वह कहने लगीं कि नाश्ता घर में ही होगा। [हँसते हैं।] तो मतलब यह कि तुमको असल में सब लोग देखना चाहते हैं [हँसते हैं।] मियाँ, यह औरतों का भी अजब कारख़ाना होता है। और···और···अच्छा तो आओ ना। देखो, टोपी ठीक कर लो। [हँसते हैं।] भई, मुआयने का क़िस्सा है ना। [हँसते हैं, और जाते हैं।] आओ भई आओ।

नौकर—हुजूर, पर्दा हो गया।

नवाब साहब—तो ठीक है, आओ भई आओ। [घर के अन्दर जाते हैं।] अच्छा, यह बात है। [हँसते हैं।] देखो भई, ये सब चिलमन के पीछे तुम्हें देखने को जमा हैं और चाय पिलाने का महज़ बहाना है। तो बैठो, ना, ना, ना। इस कुर्सी पर ताकि चिलमन की तरफ मुँह रहे तुम्हारा। [हँसते हैं।] तो भई शुरू करो ना। [चाय के बर्तनों की आवाज, चिलमन के पीछे से आहिस्ता आवाजें]

एक आवाज—अय, हय शर्मीला है।

दूसरी आवाज़—नसीबन तो कहती थी काले हैं। न काले हैं ऐसे······।

आवाज नं० १—ऐ, ऐनक तो देखो, कैसी मोटी-सी है। [दरम्यान के बर्तनों की आवाज]

नवाब साहब—अरे भई यह लो। क्या है यह, न जाने क्या बला है। समोसा है शायद। और यह···यह···,···मतलब यह खाओ ना कुछ।

आगन्तुक—जी हाँ खा रहा हूँ।

आवाज नं० १—न खा रहे हैं, ठूँस रहे हैं दुल्हनों की तरह।

आवाज नं० २—बहन, लड़का नेक मालूम होता है।

आवाज नं० १—सूरत पर भोलापन भी है।

नवाब साहब—[चाय का घूंट लेकर] तो रात को चले होगे तुम।

[बीच में बर्तनों की आवाज]

आगन्तुक—जी हाँ, सुबह पहुँचा हूँ यहाँ।

नवाब साहब—वहाँ बारिश का क्या हाल है ?

आगन्तुक—कभी-कभी जब बादल घिर आते हैं तो हो जाती है। अब तो तीन-चार दिन से बिल्कुल नहीं है।

नवाब साहब—अच्छा यह लो। शायद यह पिस्ते का हल्वा है या कोई नमकीन चीज़ होगी। तो तुमने तालीम क्यों छोड़ दी ?

आगन्तुक—इम्तेहान में पास होने के बाद फिर मैंने सोचा कि अब कुछ और किया जाय।

नवाब साहब—ठीक है, ठीक है। ज्यादा पढ़ने से भी सेहत खराब होती है। यह उम्र और यह ऐनक तौबा, तौबा ! मैं तो अब तक चाँद की रोशनी में किताब पढ़ सकता हूँ।

आगन्तुक—जी हाँ।

आवाज नं० १—बस बातों में लगाये हुए हैं ग़रीब को। न कुछ खिलाते हैं न पिलाते हैं।

आवाज नं० २—वह ख़ुद ही छुई-मुई बने हुए हैं। जरा देखो तो दाल-मोठ का एक सेव उठाया है।

आवाज नं० १—क्या बुरी लगती हैं ये मुँडी हुई मूँछें भी !

आवाज नं० दो—अच्छा-खासा मुँह तबाक़-सा होकर रह गया है।

[बीच में बर्तनों की आवाज]

नवाब साहब—भई, मेरी तबियत तो तुमसे मिलकर बहुत ख़ुश हुई। जो तारीफ़ सुनी थी उससे बहुत ज्यादा बेहतर पाया। यानी हाथ क्यों रोक लिया। यह लो, यह केक ताजा है।

आगन्तुक—आदाब अर्ज़।

आवाज नं० १—जैसी दुबली-पतली नन्हीं वैसे ही सींक-सलाई यह।

आवाज नं० २—बहन जोड़ा तो अच्छा है, खुदा मुबारक करे।

आवाज नं० १—फिर यह कि रियासत का ग़रूर नहीं।

आवाज नं० २—मगर बहन इतने दुबले हैं कि डर ही मालूम होता है।

आवाज नं० १—ऐ उसकी काठी ही ऐसी होगी। [बीच में बर्तनों की आवाज]

नवाब साहब—तो आपके वालिद ने आपके अलावा कितनी औलादें और छोड़ी हैं? मेरा मतलब यह कि आपके कितने भाई-बहन हैं?

आगन्तुक—एक भाई मुझसे छोटा, एक बहन मुझसे बड़ी और चार बहनें मुझसे छोटी।

नवाब साहब—ओहो! माशाअल्लाह! माशाअल्लाह!

आगन्तुक—जी नहीं। उन सबका तो इन्तेक़ाल हो चुका है। अब'''अब यानी सिर्फ़ मैं बाक़ी हूँ।

नवाब साहब—चच, चच! बड़ा अफ़सोस हुआ। तो ये सबका इन्तेक़ाल कैसे हुआ?

आगन्तुक—सब बीमार हो-होकर मरे; कुछ बचपन ही में मर गये, एक भाई एक बहन जवान होकर मरे।

नवाब साहब—हूँ, तो उन दोनों का किस मर्ज़ में इन्तेक़ाल हुआ?

आगन्तुक—एक को दिक़ हो गई थी, यानी भाई को और बहन को बुखार रहने लगा था। फिर खाँसी शुरू हो गई। उसके'''बस इन्तेक़ाल हो गया।

नवाब साहब—तो गोया उनको दिक़ नहीं हुई। और वालिद साहब ने किस मर्ज़ में दाइए-अजल (मृत्यु के देवता) को लब्बैक (स्वागत) कहा?

आगन्तुक—जी ?

नवाब साहब—यानी आपके वालिद साहब मुकर्रमो-मुअज्जम (आदरणीय) का किस मर्ज़ में इन्तेक़ाले-पुरमलाल हुआ ?

आगन्तुक—जी, उनको मुँह से ख़ून आता था और हरारत हो जाती थी।

नवाब साहब—हूँ, हूँ···। अच्छा, तो भई खाओ न कुछ और।

आवाज नं० १—खानदान भर को दिक़ हुई।

आवाज नं० २—बहन, यह तो बुरी बात है।

आवाज़ नं० १—बात तो शक की ज़रूर है मगर······।

आवाज नं २—अगर-मगर क्या ? खान्दान भर को बड़ी बीमारी हुई।

आवाज नं० १—वैसे लड़का अच्छा-ख़ासा है।

आवाज नं० २—ना बहन इस घराने······।

नवाब साहब—भई, तुम अपनी सेहत का ख़याल ज्यादा रखा करो। तुम ख़ुद तो अच्छे रहते हो ?

आगन्तुक—जी मैं ? मैं तो बिल्कुल अच्छा रहता हूँ।

नवाब साहब—कभी हरारत-वरारत तो या खाँसी-वाँसी मतलब यह है कि इस क़िस्म की कोई शिकायत तो नहीं हुई ?

आगन्तुक—जी हाँ, यानी जी नहीं, ये बीमारियाँ तो कभी नहीं रहीं। अलवत्ता, अलबत्ता मेदा खराब हो जाता है। यानी नजला-वजला हो जाता है कभी-कभी!

नवाब साहब—ख़ैर, ख़ैर······।

आवाज नं० १—बहन, मेरे दिल में तो चोर बैठ गया है।

आवाज नं० २—क्या बताऊँ, लड़कों का तो काल है। कहाँ तक लड़की को बिठाये रखा जाये ?

आवाज नं० १—ऐ तो ऐसी भारी भी नहीं कि यूँ जान-बूझ के झोंक दी जाये।

आवाज नं० २—वैसे तो यह लड़का हर तरह अच्छा है; खान्दानी है, अपने से कम भी नहीं। फिर सीधा मालूम होता है।

[नौकर आता है।]

नौकर—हुजूर, एक साहब मय असबाब के ताँगे पर आये हैं।

नवाब साहब—ताँगे पर आये है? ओह, वह होंगे जिनका दूसरा तार था।

नौकर—जी हाँ, गोरे-गोरे कुछ तगड़े-से हैं। इन हुजूर की उमर है।

नवाब साहब—ठीक है, ठीक है, मैं समझ गया। उनको प्रायवेट सेक्रेटरी का कमरा खोलकर ठहराओ और कह दो कि मैं दोपहर को मिलूँगा उनसे।

[नौकर जाता है।]

नवाब साहब—[आवाज देकर] देखो, खाने-वाने का खयाल रखना। [आगन्तुक से] तो मैं यह कह रहा था कि मियाँ सेहत से ज्यादा मुक़द्दम कोई चीज नहीं। तुम शायद वर्जिश नहीं करते।

आगन्तुक—जी वर्जिश? वर्जिश तो नहीं करता।

नवाब साहब—हाँ तो करना चाहिये तुमको। मुझको देखो इस उम्र में तुमसे ज्यादा तेज दौड़ सकता हूँ। और यही वजह है कि नजला तो खैर हो जाता है मगर······मगर मेदा कभी खराब नहीं होता। खूब खाओ और वर्जिश करो। तुम्हारा खास शग़ल क्या है।

आगन्तुक—हुजूर, अब तो जब से बेकार हूँ ज्यादातर कुतुब-बीनी (पठन-कार्य) का मशग़ला रहता है?

नवाब साहब—मैंने यह मशग़ला कभी नहीं रखा। इससे आँखों को नुक़सान पहुँचता है। वालिद साहब को बहुत शौक़ था कुतुबबीनी का। अब उनके कुतुबखाने को मैंने वर्जिश-घर बना रखा है। मैं दिखाऊँगा तुम्हें।

आगन्तुक—दुरुस्त है।

नवाब साहब—दुरुस्त नहीं, बल्कि यही होना चाहिए'''। तो ख़ैर '''मतलब यह कि और कुछ शिकार-विकार से शौक़ है या वो भी नहीं ?

आगन्तुक—जी ? जीहाँ। एकाध मरतबा शिकार देखने तो गया हूँ मगर खेला कभी नहीं।

नवाब साहब—हैरत है, यही सख्त हैरत है। यानी शिकार से तो हमारे तब्क़े को खास ताल्लुक़ है। दूसरे यह एक आला क़िस्म की वर्जिश भी है। आखिर शिकार से दिलचस्पी क्यों नहीं है ?

आगन्तुक—वह बात यह है''''''वह बात यह है कि पहले तालीम की मसरूफ़ियत (शिक्षा की व्यस्तता) ने मुहलत न दी, फिर''''''।

नवाब साहब—फिर बस पढ़ने-लिखने के रह गये। तो ख़ैर, मगर भई इन चीजों को बिल्कुल तो नहीं छोड़ना चाहिए।

एक आवाज—एक बात भी तो रईसज़ादों की-सी नहीं है।

दूसरी आवाज—इतना बड़ा रईस और ज़रा भी तमकनत (अभिमान) नहीं।

आवाज नं० १—रियासत छू भी नहीं गई है ; बस यही एक गधा पड़ गया है।

आगन्तुक—तो हुजूर से डिप्टी साहब ने मेरे लिए कहा होगा।

नवाब साहब—डिप्टी साहब ? कौन डिप्टी साहब ? भई तुम्हारे मुतल्लिक़ तो कुँवर साहब से बहुत कुछ सुना था, और जैसा सुना था वैसा ही पाया।

आगन्तुक—मैं चाहता था कि उस सिलसिले में कुछ बात हो जाती।

नवाब साहब—मियाँ, बात ही क्या होना है ? और होना है सो

होती रहेगी, अभी तो ठहरो यहाँ। ज़रा इस देहात की हवा खाओ। भई यह तुम्हारा ही घर है।

आगन्तुक—यह तो दुरुस्त है हुज़ूर, मगर मैं चाहता था कि कोई ग़लतफ़हमी पैदा न हो।

नवाब साहब—लाहौल वला क़ूवत। भई तुमने यह ग़लतफ़हमी की भी एक ही कही। एक मरतबा मुझको ग़लतफ़हमी हुई है कि नवाब साहब चौपड़ मुझसे मिलने आ रहे थे। मैं उनके इन्तेज़ार में था कि एक इन्श्योरेंस कम्पनी का ऐजण्ट कहीं से आ निकला। मैं क्या जानूँ, मैं समझा कि यही हैं नवाब साहब। भई हर तरह की ख़ातिर-मदारात (आव-भगत) की और वो अल्लाह का बन्दा भी चुप कि इतने में नवाब साहब तशरीफ़ ले आये। क्या कहूँ कि उस कमबख़्त एजण्ट पर कितना ग़ुस्सा आया है। अगर वह नौ-दो ग्यारह न हो जाये तो मैं बाद में उसकी और अपनी जान एक कर दूँ।

आगन्तुक—जी तो मेरा······मेरा मक़सद यह है कि उसी क़िस्म की ग़लतफ़हमी।

नवाब साहब—[क़हक़हा लगाते हुए] ख़ैर, ख़ैर। इस क़िस्म की ग़लतफ़हमी की भी एक ही रही। मियाँ वह ऐजण्ट तो था समझदार फ़ौरन रफ़ूचक्कर हो गया।

आगन्तुक—इसीलिए तो मैं चाहता था कि अपने मुताल्लिक़ सब कुछ सफाई से अर्ज़ कर दूँ।

नवाब साहब—ओ फ़्फ़ो! भई आख़िर ऐसा कौनसा तूफ़ान आ रहा है? क्या जल्दी है आख़िर?

आगन्तुक—यह तो सही है मगर मैं चाहता था कि फ़ैसला हो जाता और बात भी साफ़ हो जाती। मेरे दिल में कुछ······।

नवाब साहब—[बात काट कर] ख़ैर, ख़ैर। तुम्हारे दिल में कुछ न होना चाहिए और यह बात तो तुम जानते हो बग़ैर औरतों के मश-

विरे के हो ही नहीं सकती। अब तुम आये हो, कुछ दिन ठहरो। फिर इत्मेनान से होती रहेगी बात भी।

आगन्तुक—मगर ग़लतफ़हमी······।

नवाब साहब—तौबा है। मियाँ ग़लतफ़हमी गई जहन्नुम में। तुम चलो बाहर और अब आराम करो। थोड़ी देर में एक घण्टे में मैं बाहर आता हूँ। [आवाज़ देकर] अरे कोई है?

नौकर सरकार।

नवाब साहब—देखो, मियाँ को ले जाओ और वहीं मौजूद रहो। मैं थोड़ी देर में आता हूँ।

आगन्तुक—आदाब अर्ज़।

नवाब साहब—जीते रहो, जीते रहो।

[आगन्तुक नौकर के साथ जाता है। बाहर कमरे में पहुँचकर।]

नौकर—अल्लाह सलामत रखे हुज़ूर को। नवाब साहब ने बहुत पसन्द किया है अब बड़ी सरकार की मर्ज़ी बाकी है।

आगन्तुक—भई जुम्मनखाँ, मेरे ख़याल में यहाँ कुछ धोखा हो रहा है।

नौकर—नहीं हुज़ूर, अल्लाह जानता है बड़ा अच्छा घराना है। और सब बड़े अच्छे लोग हैं।

आगन्तुक—अच्छा यह बताओ कि पहला प्रायवेट सेक्रेटरी क्यों निकाला गया था?

नौकर—हुज़ूर, वह था ही इस क़ाबिल। एक दिन मुझसे तू-तकार हो गई थी। मैंने भी बच्चे के वह हाथ मारे होंगे कि छठी का दूध तो याद आ ही गया होगा।

आगन्तुक—यानी तुमने मारा प्रायवेट सेक्रेटरी को?

नौकर—भला हुज़ूर, मैं ख़ान्दानी नमक-ख़्वार इस ड्योढ़ी का, वो आया वहाँ से मुझ पर रौब जमाने। मैंने भी मरम्मत कर दी और

नवाब साहब से जो उसने शिकायत की तो वह दौड़े मोरछल लेके उसी के पीछे।

आगन्तुक—तो भई मैं बाज़ आया यहाँ रहने से।

नौकर—भला हुज़ूर की और उसकी बराबरी ? अल्लाह ने चाहा मालिक होंगे आप सारी रियासत के। नवाब साहब के अल्लाह रखे सिवाय साहबजादी के और है ही कौन ?

आगन्तुक—साहबज़ादी ? क्या मतलब ?

नौकर—जी हाँ, बस वही साहबजादी है जिनसे सरकार की बात ठहर रही है।

आगन्तुक—मेरी बात ? भई वाक़ई ग़लतफ़हमी हो रही है। अरे भाई मैं तो नौकरी के लिए आया हूँ प्रायवेट सेक्रेटरी की जगह पर।

नौकर—ऐं ?

आगन्तुक—भाई जुम्मनखाँ खुदा के लिए नवाब साहब के बाहर तशरीफ़ लाने से पहले मुझको यहाँ से रवाना कर दो।

नौकर—यह क्या हुआ ? और वह जो अब आये है ?

आगन्तुक—भई, वही होंगे नवाब साहब के दामाद और मैं तो अब प्रायवेट सेक्रेटरी भी नहीं रहना चाहता। ज़रा भई यह बिस्तर-विस्तर पकड़वालो।

नौकर—अम्मा, ठहरो तो। चले वहाँ से बिस्तर-विस्तर पकड़वा लो। नवाब साहब से तो मैं कह दूँ। बड़ा ग़ज़ब किया यार तुमने।

आगन्तुक—भैया, मैंने कुछ ग़ज़ब नहीं किया। लो ज़रा हाथ लगा दो इस बक्स में, मैं लिये जाता हूँ।

नौकर—नवाब साहब से कह के जाओ ना। अब क्या मुझको बातें सुनवाओगे ?

आगन्तुक—नही भाई, मेरी जान बख्श दो। मै अब नवाब साहब का सामना न करूंगा। [बक्स उठाकर जाने लगता है।]

नौकर—ठहरो मै नवाब साहब से कहतो दूँ।

[नौकर उधर जाता है।]

आगन्तुक—नही, जरा देर और ठहर जाओ मै कोठी से निकल जाऊँ।

[तेज क़दमों से जाता है।]